P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-12* March- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

छात्रों के अनुत्तीर्ण होने के कारणों एवं उनकी अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन का अध्ययन

शारदा गोयल
प्राचार्या,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आर्या महिला विद्यापीठ,
भरतपुर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान परिदृश्य में देखे तो विद्यार्थी पिछडता जा रहा है। जो राश्ट्र के लिए बहुत नुकसान की बात है। विद्यार्थी की सोच संकुचित हो रही है। एक कवि ने अपनी चार पंक्तियों में वर्णन किया है। कि

हे समय शेष, कुछ तो पढ ले।
कुद लिखकर हम, आगे बढ ले।
दिल से दिल जोडें नेह पूर,
सोपान सफलता के चढ ले।

वर्तमान में विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण होने की संख्या देखें तो षोचनीय है जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी देश का भावी नागरिक बनने से पहले ही पतन की ओर धकेल दिये जाते हैं क्योकि आज का विद्यार्थी, विद्यालयों से पलायन कर कुसंगति की ओर अग्रसर हो जाता है। तथा सामाजिक अपराधों में लिप्त हो जाता है जिससे चोरी, लूटपाट, डकैती, बलात्कार आदि अपराध दिन प्रतिदिन बढते चले जा रहे हैं। शिक्षा में विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण अथवा पिछडेपन के कई कारण हैं जैसे– अधिगम की कमी, अध्यापन आदतों की कमी, विद्यालय, सामाजिक वातावरण, समायोजन, शारीरिक व मानसिक स्थिति, सही मार्गदर्शन न मिलना, आर्थिक तंगी, विद्यालयों में भेदभाव, पाठ्यपुस्तकों को बोझ, अध्यापकों का व्यवहार, कठोर अनुशासन, लडका व लडकियों में भेदभाव आदि।

मुख्य शब्द : अनुत्तीर्ण, समायोजन, मानसिक स्थिति, सामाजिक वातावरण।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की रीढ की हड्डी विद्यार्थी है परन्तु विद्यालयों में विद्यार्थियों पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा इस कारण आज का विद्यार्थी पिछडता जा रहा है। जो राष्ट्र के लिए बहुत नुकसान की बात है विद्यार्थियों की षोच दिन प्रतिदिन बदलती जा रही है आदतें संकुचित होती जा रही है परन्तु न तो समाज, न परिवार और न ही विद्यालय इनकी ओर विषेप ध्यान देते है।

वर्तमान में शिक्षा को एक व्यवसाय बना दिया है जिससे गरीब विद्यार्थियों की आकांक्षायें अपने अन्दर ही सिमट कर रह जाती है और उनमें हीन भावना पैदा होने लगती है विद्यालयों में कक्षाओं में क्षमता से अधिक छात्र होते हैं जिससे अध्यापक व विद्यार्थी के बीच सम्पर्क नहीं रहता घर परिवार में भी पढाई का माहौल नहीं रहता जिससे विद्यार्थी नियमित अध्ययन नहीं कर पाते पढाई को बोझ समझते हैं जिससे वे अनुत्तीर्ण होने के कगार पर पहूँच जाते हैं।

यू0एन0डी0पी0 की रिपोर्ट से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् यदि शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया जाता तथा संविधान की धारा 45 के प्रावधान के अनुसार 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को अनिवार्य एंव निःशुल्क शिक्षा के प्रावधान को दृढता से लागू कर दिया होता तो अब से बहुत वर्ष पहले ही शिक्षित समाज का निर्माण हो गया होता तथा वर्तमान दयनीय स्थिति उत्पन्न नही होती। दुर्भाग्य से सरकार, शिक्षक, अभिभावक एवं समुदाय किसी ने भी यह नही सोचा कि स्वावलम्बी एवं संस्कारवान शिक्षा, बच्चों को केसे दी जाये। भारतीय मनीषियों का स्पष्ट कथन है कि सोच से दृष्टिकोण, दृष्टिकोण से व्यवहार तथा व्यवहार से कर्म बनता है।

यदि सबकी सोच ठीक बन जाती है तो आज यह स्थिति नही होती अतः सबसे पहले सोच को बदलने की जरूरत हैं। किसी शायर ने ठीक ही कहां है कि

सोच को बदलेंगे तो सितारे बदल जायेंगे।
नजर को बदलेंगे तो नजारे बदल जायेंगे।
कश्ती को बदलने की जरूरत नही है।

कश्ती के रूख को बदलेंगे तो किनारे बदल जायेंगे।

जब हम शिक्षित समाज के निर्माण की चर्चा करते है तो हमें सबसे अधिक जोर बच्चों कि शिक्षा पर देना होगा। यदि बच्चों कि शिक्षा प्रभावी होगी तो आगे चलकर बच्चें ही बडे होकर शिक्षित समाज का निर्माण करेंगे।

अध्ययन की आवश्यकता

आज हमारे देश में अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की समस्यायें बढ गई हैं इस समस्या के कई कारण हो सकते हैं जिसमें विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन आदि कारक हैं अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को अभिभावक, अध्यापक, सहपाठी व दोस्त प्रोत्साहित नही करते, उसकी वजह से वे बहुत निराष रहते हैं और उनमें नकारात्मक व्यवहार उत्पन्न हो जाता है जो समाज, अभिभावक एवं अध्यापकों के लिए धातक सिद्व होता है तथा आत्महत्यायें जैसी घटनायें होती हैं।

विद्यार्थियों में समायोजन की समस्या बनी हुई है जो उसकी शिक्षा पर प्रभाव डालती है इस किया में बुद्वि विद्यार्थी को सहयोग देती है मन्दबुद्वि बालकों को विशेषतः तीन क्षेत्रों में समायोजन की समस्या का सामना करना पडता है परिवार, समाज और विद्यालय आदि।

इस प्रकार हम अनुत्तीर्ण होने के कारणों को रोकने हेतु छात्रों की योग्यता, रूचि, रूझान, क्षमता, प्राप्त ज्ञान, विषय, पाठ्यक्रम आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करके ही रोक सकते हैं इनमें परिवार, विद्यालय और समाज का महत्वपूर्ण योगदान होना जरूरी है अन्यथा देश के भावी नागरिक पतन की ओर जा सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण होने के कारणों का अध्ययन करना जिसमें विद्यार्थी की अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व गुण, विद्यार्थी का परिवार, समाज व स्कूल में समायोजन, आर्थिक स्थिति, ग्रामीण व षहरी परिवेष आदि का अध्ययन कर अनुत्तीर्ण होने के कारणों का पता लगाकर उनका निराकरण करना है बालक बाल्यावस्था में जीवन निर्माण हेतु अपने सम्पूर्ण प्रयासों को एकत्रित करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर रहता है परन्तु कितने प्रतिषत बच्चे ऐसा कर पाते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान स्वंय यह मानता है कि हर बालक के मप्तिष्क व अधिगम शैली पर उसकी अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन आदि भिन्नताओं का प्रभाव पडता है सीखने की प्रकिया में परिपक्वता और अनुभूति दोनों का प्रभाव पडता है

शिक्षा मनोविज्ञान का यह लक्ष्य है कि उन दषाओं को देखें, जिसके अन्तर्गत कक्षा में अधिगम हो रहा है अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी समाज के लिए अभिशाप नहीं हैं अपितु उनके लिए उचित पाठ्यक्रम, विपयवस्तु, शिक्षण विधि, सहायक सामग्री हो ताकि वह कक्षा के सामान्य बालकों के समकक्ष आ सके। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये शिक्षा के क्षेत्र में यह समस्या अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं ज्वलंत है इस समस्या का महत्व निम्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट हो जाता है।

विद्यार्थी के दृष्टिकोण से

विद्यार्थियों को अपनी स्वंय की योग्यताओं/क्षमताओं तथा अपनी वस्तुस्थिति का ज्ञान होना आवष्यक है जिससे वे अपनी धीमी गति को प्रभावित करने वाले कारणों, अध्ययन आदतों, व्यक्त्वि गुण एवं समायोजन आदि को समझकर धीरे धीरे अपनी आदतों में सुधार कर प्रगति की ओर बढ सके।

अध्यापक के दृष्टिकोण से

विद्यालय विद्यार्थी में अर्न्तनिहित क्षमताओं को निखारने का महत्वपूर्ण स्थान है विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास तब तक सम्भव नहीं है जब तक यह शिक्षक स्वंय विद्यार्थी में निहित विशेषताओं, गुणों एवं अवगुणों को न पहचाने जिससे शैक्षिक प्रगति अवरूद्व हो रही है जैसे कम समझ पाना, अधिक समय तक ध्यान न देना, शीघ्र भूल जाना, सूक्ष्म तर्कशक्ति, चिन्तन शक्ति का अभाव या अल्प होना आदि अध्ययन संबंधी कठिनाईया पाई जाती हैं।

अभिभावकों के दृष्टिकोण से

यह समस्या अधिक महत्वपूर्ण है सभी अभिभावक यह अपेक्षा करते हैं कि उनके विद्यार्थी कभी अनुत्तीर्ण न हो इस अध्ययन से अभिभावको को यह ज्ञान होगा कि अनुत्तीर्ण होने के कारण और अध्ययन आदतें, व्यक्तित्व गुण एवं समायोजन किस स्तर तक प्रभाव डालता है वे इन कारणों को दूर कर सकेंगे जिससे उन्हें आत्मसंतोष मिलेगा।

साहित्यावलोकन

जयन्त कुमार जोशी – 2013 ने विद्यालयों से पलायन करने वाले छात्रो के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया।

सुनीता मूर्डिया 2014 ने अध्यापकों की आध्यात्मिक बुद्वि, व्यक्तित्व विशेषकों एवं समायोजन में सहसम्बंध का अध्ययन किया।

राजेश माली 2015 में पाठ्य सामग्री प्रवृतियों में भाग लेने वाले एवं भाग नहीं लेने वाले अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियें में व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया।

जी.एम. बारबायस 2016 ने निर्देशन कार्यक्रम का भावात्मक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया।

अतासी मोहन्ती और मधुस्मिता मिश्रा (2011) Quest in education vol XXV ने व्यावसायिक अभिवृति और परम्परागत एवं विकासशील शिक्षकों के समायोजन परम्परागत महिला शिक्षकों व पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

एन.सुब्रमणियम (2016) "Adjustment problem of primary school children A survey in Andhra Pradesh" इस शोध का उद्देश्य प्राइमरी के बालकों का समायोजन देखना था।

शोभा उपाध्याय (2017) माध्यमिक विद्यालयों में देर से आने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन किया।

प्रयुक्त विधि व उपकरण

वर्धमान षोध के लिये सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना गया है तथा स्वनिर्मित उपकरण अनुत्तीर्ण होने के कारणों की प्रमापनी बनाई गई है। इसके अलावा डा0

भाईलाल भाई वी.पटेल की अध्ययन आदतें संशोधिनी का उपयोग किया है। व्यक्तिगत गुण प्रमापनी हेतु डा0आर0बी केटल द्वारा सन् 1956 में निर्मित (14 P.F test) का हिन्दी रुपान्तरण जो कि एस.डी.कपूर द्वारा निर्मित है। समायोजन कि लिये डा. ए. के पी.सिन्हा व डां. आर पी.सिंह द्वारा 1971 में निर्मित मानवीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

भरतपुर जिले के 10 माध्यमिक विद्यालयों जिसमें 5 निजी व 5 सरकारी 100 छात्र व 100 छात्राओं को लिया गया 10 वीं के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमे माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परिणाम को लिया गया है।

अनुर्तीण विद्यार्थी कारणों के घटक

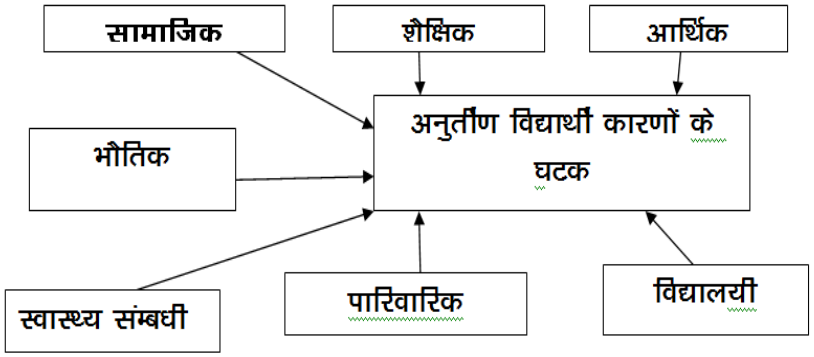

समग्र न्यादर्ष की अध्ययन आदतों के घटक

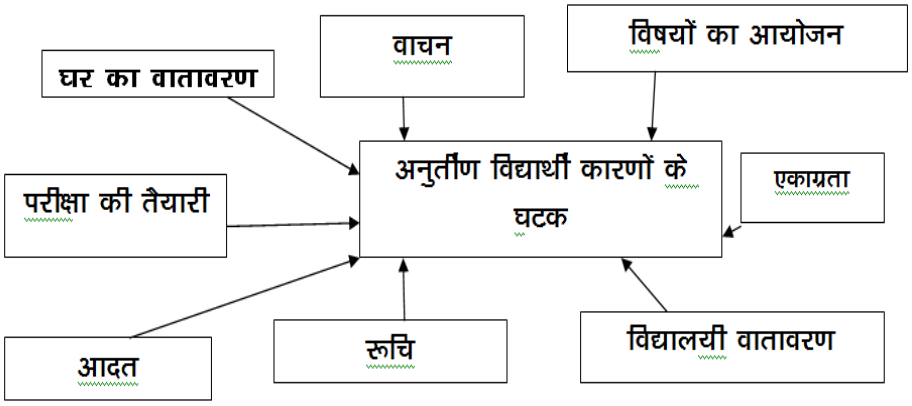

अनुतीर्ण विद्यार्थी व्यक्तित्व गुण घटक

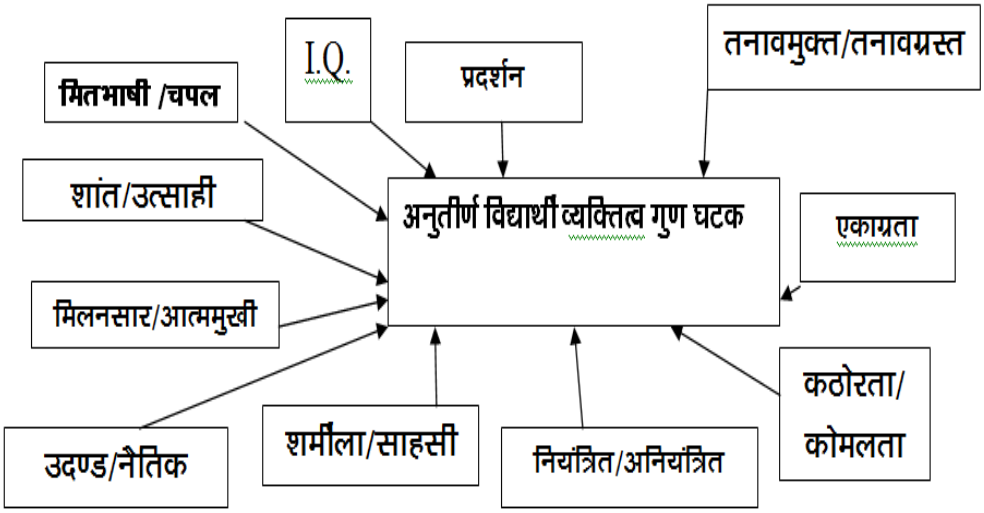

निष्कर्ष

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के कारण प्रथम शैक्षणिक, द्वितीय स्वास्थ्य संबंधी, तृतीय परिवारिक तथा विद्यालयी में सार्थक अंतर पाया गया जबकि आर्थिक सामाजिक और भौतिक में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. उच्च एवं निम्न आर्थिक स्थिति वाले अभिभावकों के विद्यार्थियों में अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के कारण प्रथम शैक्षणिक, द्वितीय आर्थिक, तृतीय सामाजिक में सार्थक अंतर पाया गया चतुर्थ भौतिक में सार्थक अंतर नही पाया गया पंचम स्वास्थय संबंधी क्रमशः परिवारिक, विद्यालयी में सार्थक अंतर पाया गया।
3. राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थी समग्र न्यादर्ष अपने अनुत्तीर्ण होने के प्रथम कारण शैक्षणिक, द्वितीय आर्थिक, तृतीय सामाजिक एवं भौतिक में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पंचम स्वास्थय संबंधी, परिवारिक और विद्यालयी में सार्थक अंतर पाया गया।
4. छात्र व छात्राओं के अपने अनुत्तीर्ण होने के प्रथम कारण शैक्षणिक में सार्थक अन्तर पाया, द्वितीय आर्थिक, तुतीय सामाजिक और चतुर्थ भौतिक में सार्थक अंतर नही पाया गया। स्वास्थ्य संबध में तथा विद्यालयी में सार्थक अंतर पाया गया परिवारिक में सार्थक अंतर नही है।
5. विद्यार्थी प्रथम क्षेत्र भावुक, द्वितीय क्षेत्र शैक्षिक ओर तृतीय क्षेत्र सामाजिक मे अनुत्तीर्ण विद्यार्थीयो का समायोजन संतोषजनक नही पाया गया
6. अनुत्तीर्ण होने के कारण का अनुत्तीर्ण अध्ययन आदतो, व्यक्तित्व गुण, समायोजन के साथ उच्च स्तरीय धनात्मक संबध पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 *Abelsor,H.H. (2013); "TheArt of Educational Research" , World Book*
2 *Ary. DonalAnd Others (2014); "Introduction to Research in Education ", New York: RinehartAnd winston*
3 *Agrawal, J.C.(2015) ; "Educational Research",Arya Book Depot, New Delhi*
4 *Barr,A.S. & Coublgs Scates (2016); the Methodology of Educational Research" New York, Neploten Country Craftine*
5 *Borg, W.R. & Gall, M. (2016) , Educational Research",New York , Longmans GreenAnd Co. Ltd.*
6 *Agrawal J.C. (2017), Essentials of Educational Psychology", Vikas Publication Pvt.Ltd.*